A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

संगीत शास्त्र के मुख्य सिद्धांतों के आधार पर विद्यापति पदावली का सांगीतिक अध्ययन

Dr. Meenakshi Mahajan
Associate Professor, Department of Music, Fateh Chand College for Women, Hisar, Haryana

OPEN ACCESS

सार

विद्यापति की पदावली का विश्लेषण करने पर उनमें कई विशेषताएं मिलती हैं। संगीतात्मकता सबसे बड़ी विशेषता के रूप में इनके द्वारा रचित पदों में मिलती है। इसके लिए उन्होंने अपने पद मात्रिक छंद में लिखे हैं। उन्होंने भावों के अनुकूल छंद योजना द्वारा अपने पदों में नाद- सौंदर्य की अवतारणा की है। समकालीन शास्त्रीय संगीत से वह बहुत अच्छी तरह से परिचित थे। तभी उन्होंने प्रत्येक छंद के लिए, छंद के भावानुसार रागों के नाम दिए हैं। समकालीन रागों को ही उन्होंने अपनी पदावली में स्थान दिया। शास्त्रीय संगीत में माहिर संगीतज्ञ ही भाव के अनुसार रागों का चयन करने में सक्षम हो सकता है। यह सफल संगीतज्ञ, कवि थे। इनके काव्य में संगीत शास्त्र के मुख्य सिद्धांत स्वर, राग, छंद, लय, ताल, सौंदर्य, भाव तथा रस पदानुकूल राग- रागिनियो का प्रयोग आदि संगीत शास्त्रीय तत्वों का यथानुकूल प्रयोग हुआ है। इनका छंदों पर पूरा अधिकार था। इसके लिए इन्होंने 22, 24, 26, 27, 28 मात्राओं के छंदों का प्रयोग किया। टेक में उन्होंने किसी विशेष छंद को अपनाया तो अंतरे में किसी अन्य छंद को। विभिन्न प्रकार के छंदों का प्रयोग उन्होंने पदावली में किया। गीतों में संगीत की मूलभूत विशेषता "छंद-लय- ताल बद्धा" होती है। इसलिए इनके द्वारा रचित बहुत से पदों को आधुनिक शास्त्रीय संगीत की शैली ख्याल, ध्रुवपद, ठुमरी आदि शैलियों में संगीतज्ञ गा रहे हैं। इन्होंने पदावली लोक मानस की भाषा मिथिला में लिखी तथा श्रृंगार रस के दोनों पदों संयोग और वियोग के बहुत सुंदर हृदय स्पर्शी चित्र प्रस्तुत किए। साथ ही इसके अतिरिक्त भक्ति के पदों में शांत रस, दुर्गा स्तुतियों में वीर रोद्र और अद्भुत आदि रसों का सुंदर समन्वय दिखाई पड़ता है। विद्यापति की पदावली में वाद्यों, वाद्यों के स्वरों का प्रयोग मिलता है। करताल, डफ, बीन, रबाब, मूरज,स्वरमंडल, मृदंग आदि नाम इनके कई पदों में वर्णित है। इनमें से कुछ वाद्य तो लोकगीत और भजन शैली के लिए उपयुक्त है। कुछ वाद्य शास्त्रीय संगीत की गायन शैलियों के लिए जैसे मृदंग, रबाब, स्वरमंडल आदि के लिए। इसलिए शास्त्रीय संगीत की गायन शैलियां ख्याल, ध्रुवपद, ठुमरी आदि में स्वरलिपि बधता इनके पदों में मिलती है। लोकगीत और भजन शैली में जनमानस ने इनके पदों का प्रचार किया। इसके अतिरिक्त बहुत से पद ऐसे मिलते हैं जो संगीत के शास्त्रीय तत्वों से संबंधित ना होकर भी अपनी निजी आत्मा की संगीतमयता से प्रभावित करते हैं।

विशेष शब्द- *संगीतमकता, छंद, राग, ताल, रस*

भूमिका

भारतीय संगीत अपने मूल रूप में मुख्यतः स्वर और लय पर आधारित है जिसकी प्राप्ति नाद द्वारा संभव है। नाद के अंतर्गत गति और श्रुति व्याप्त है तथा इन्हीं गति और श्रुति को ग्रहण करके संगीत में लय एवं स्वर की सत्ता स्वीकार की गई। लय भी अखिल ब्रह्मांड में व्याप्त है। संगीत में लय के विभिन्न अंग का भी प्रस्तार किया गया है। लय के अंतर्गत मात्रा, ताल, विभाग, सम, ताली, काल, मार्ग, क्रिया, अंग, जाति, विभाग, कला, यति आदि समाविष्ट है। संगीत में स्वर और लय को आधारशिला मानकर इस संगीत रूपी भवन में मींड, वर्ण, खटका, मुर्की, गमक, काकू, रस, छंद, भाव, सौंदर्य, तान, आलाप आदि को विभिन्न रचनाओं में प्रयोग किया जाता है।

विद्यापति सहृदय, मर्मस्पर्शी, बहुरंगीय कलाकार थे। उनकी पदावली में एक और जहां साहित्य के भाव, सौंदर्य, रस, छंद आदि की ओजस्वी धारा प्रवाहित होती है तो दूसरी ओर संगीत की अनुपम छटा परिलक्षित होती है।

संगीत शास्त्र के संबंध में प्रारंभिक शास्त्रीय संगीत नाद, श्रुति, स्वर, सप्तक, थाट, राग गायन, गायन की विविध शैलियां, गीत, गीत के विविध प्रकार लय, मात्रा, ताल और ताल के विविध अंग, विविध गतियों का परिचय, छंद, पद, भाषा - सौंदर्य, रचना की अनुकूलता, भाव और रस तथा अलंकार आदि के रूप में प्राप्त होता है। विद्यापति की पदावली उल्लिखित शास्त्रीय आधारों पर खरी उतरती है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

नाद

नाद के दो भेद माने गए हैं -1. आहत नाद 2. अनाहत नाद। अनाहत नाद का सीधा संबंध उसे अलौकिक सत्ता पारब्रह्म से होता है तथा आहत नाद का प्रयोग संगीत, साहित्य, समस्त शास्त्र कलाओं में प्रयुक्त होता है। संगीत में स्वरों के माध्यम से मधुर ध्वनियों को ग्रहण करते हैं और काव्य में भाषा के माध्यम से मधुर शब्द- रचना का प्रयोग किया जाता है।

"विद्यापति की पदावली कवि की ऐसी ही मधुर कृति है जिसमें विद्यापति ने प्रत्येक छंद में मधुर शब्द ध्वनियों का प्रयोग किया है। इसी माधुर्य गुण के कारण पदावली संगीतमय सिद्ध हुई है तथा संगीत में गृहीत मधुर नादों के गुणों के नितांत समीप है। इस प्रकार पदावली में काव्य के प्रत्येक शब्द में कवि ने मधुरनाद का प्रयोग बड़ी सजगता से किया हैं।"[1]

ध्वनि

काव्य में ध्वनि का प्रयोजन माधुर्य एवं सौंदर्य का सृजन करना एवं आनंद वर्धन करना होता है। इस दृष्टि से विद्यापति पदावली में ध्वनि सिद्धांत का पूर्ण रूपेण पालन किया गया है। जिसके फलस्वरुप संगीत में उसका समीप्य भाव भी प्रकट होता है। पदावली का प्रत्येक पद मधुर ध्वनि से युक्त होने के कारण कर्णप्रिय आनंद प्राप्त करने वाला है।

स्वर

संगीत में 22 श्रुति तथा 12 सुरों का विधान बताया गया है। विद्यापति पदावली क्योंकि गेय है इसलिए उसके प्रत्येक पदों का गायन इन स्वर पर आज भी किया जाता है। इनमें ध्वनि के उतार-चढ़ाव की क्षमता विद्यमान है जो की स्वर का प्रमुख लक्षण है।

सप्तक

काव्य के अंतर्गत सप्तक भेद की दृष्टि से पठन अथवा श्रवण करने पर अधिक रोचकता आ जाती है। विद्यापति पदावली के प्रत्येक पद को मंद, मध्य, तार, किसी भी सप्तक में गाया जा सकता है क्योंकि बिना उक्त भेद के रचना में भावाभिव्यक्ति संभव ही नहीं होती।

राग

स्वर और वर्ण से विभूषित ध्वनि जो मनुष्य का मनोरंजन करें, राग कहलाती है। इसमें रंजकता, माधुर्य, सौंदर्य, आदि गुणों का सन्निवेश वान्छणीय होता है। स्वरों के बदलते रूप रागों को जन्म देते हैं और प्रत्येक राग किसी न किसी भाव का पोषक होता है। "विद्यापति पदावली हिंदी काव्य की जननी है। अतः उसक। प्रत्येक पद गेयत्व के गुणों से परिपूर्ण है तथा उन्हें रागों के अंतर्गत गाया जाता रहा है। विद्यापति द्वारा गृहीत राग- रागनियां कुछ जयदेव कृत गीत गोविंद से, कुछ नाथो और सिद्धों के साहित्य से तथा समकालीन प्रचलित राग- रागिनी पद्धति से ली गई है जिसके कुछ नाम बसंत, कोलार, सारंगी, मलारी, मालव, ललित, मानिनि, कानत, असावरी, राघवी, शुद्ध केदार हैं। उल्लेखित अधिकारों राग-रागनियां पदावली में ग्रहण की गई है।"[2] विद्यापति के अनुयायियों में कृष्ण भक्ति संप्रदाय तथा अष्टछाप के भक्त कवियों में उनकी अनुकृति पूर्ण रूपेण प्रतिबिंबित हुई है। यही अनुकरण कृष्ण भक्ति शाखा के अन्य कवियों यथा सूरदास, मीरा, सहजोबाई आदि भक्त कवियों और कवित्रियों में भी स्पष्ट रूप से प्राप्त होती हैं।

विद्यापति कवि गायक तो थे ही साथ ही अच्छे संगीतज्ञ भी थे। डॉक्टर सुमदृ झा द्वारा संपादित विद्यापति गीत संग्रह रागबद्ध पद का एक विराट भंडार है। इस संग्रह के आरंभिक 56 गीत राग मालव में 57-130 तक गीत घनछरी राग में, 136 - 146 तक मलाहरी राग में, 147 राग सामरी, 148 - 154 राग अहिरनी, 155 - 157 राग केदार, 158- 162 कान्हडा राग में, 163 - 194 राग कोलर, 196 - 202 सारंगी राग, 203 - 207 गुर्जरी राग में तथा आगे भी कई पद बसंत, विभास, नट राग, ललित, वरली, आदि रागों में दिए हुए हैं। पदों के गाने के लिए राग नाम का निर्धारण करना भी आसान नहीं है क्योंकि इसके लिए काव्य निहित भावोंभिव्यक्ति के सुस्पष्टीकरण के लिए कौन सा राग उपयुक्त होगा या नहीं होगा इसके लिए संगीत और काव्य ज्ञान की परिपक्वता अवश्य हैं।

गायन की विविध शैलियों के अनुरूप विद्यापति के पद

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन की विविध शैलियां जैसे ध्रुवपद शैली, ख्याल शैली इसके अतिरिक्त भजन शैली, लोकगीत शैली प्रचलित है। पदावली के अधिकतर पद लोकगीत और भजन शैलियों के अंतर्गत आते हैं। लेकिन पदावली के बहुत से पद ऐसे भी हैं जिन्हें ध्रुवपद, ख्याल और ठुमरी गायन शैली के अंतर्गत रखा जा सकता है। उदाहरणतय: कुछ पद इस प्रकार है:

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

ध्रुवपद शैली में विद्यापति के पद

विद्यापति पदावली में विद्यापति ने बहुत से पद ऐसे लिखे हैं जिन्हें ध्रुवपद शैली में गया जाता है जैसे

" जय-जय भैरवी-असुर -भयाउनी, पशुपति-भामिनी माया

सहज सुमति वर दिऊ है गोसाउनि।अनुगती गति तुअ पाया"[3]

"कन - कन लखिमी चरन ताल ने ओछए, रांगिनी हेरि विभोर

करूं अभिलाष मनिहं पद - पंकज अहनिसी कोर-अगोरी"[4]

इसी प्रकार से अनगिनत पद विद्यापति पदावली में मिलते हैं जिन्हें आज भी ध्रुवपद शैली में गाया जाता है।

ख्याल शैली में विद्यापति के पद

गायन की प्रत्येक शैली की अपनी निजी विशेषता होती है जिसके कारण प्रत्येक शैली के गाने का तरीका, तालों का प्रयोग, गीत के बोल लिखने का ढंग, सब अलग-अलग होता है। भक्त कवि विद्यापति समकालीन शास्त्रीय संगीत की विभिन्न शैलियों से परिचित थे ऐसा उनके काव्य का अध्ययन करने से पता चलता है। इसी कारण उन्होंने ध्रुवपद, ख्याल शैली के अनुरूप पद रचना की। ख्याल में स्वर सौंदर्य पर अधिक बल दिया जाता है। ध्रुवपद में लयकारी पर। विद्यापति की पदावली के कुछ पद इस प्रकार हैं जो ख्याल शैली के अनुरूप रचे गए हैं।

"सखी है बूझल कान्ह गाओर

पितरक टौड काज दुहू कओन लहु

ऊपर चकमक सार"[5]

"अभिनव एक कमल पुल सजनी

दोना नीम के डार

सेओ फूल ओतहि सुखमल सजनी

रसमय फुलक नेवार"[6]

ठुमरी शैली में विद्यापति के पद

ठुमरी श्रृंगार रस प्रधान होती है और मीड कण का विशेष प्रयोग होता है। विद्यापति पदावली में ठुमरी (भाव शैली) के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है।

" सून सेज हिय सालय रे

पिया बिनु मरण मोयं आजि

मिनित करओं सहलोलिनि रे

मोहि देर आगिहर साजि"[7]

" पिया मोर बालक हम तरूनी

कौन तप चुकलौंह भेलौहं जननी"[8]

लोकगीत शैली में विद्यापति के पद

विद्यापति ने मिथिला भाषा जो कि जनमानस की भाषा थी। उसी में उन्होंने लोकगीत शैली के माध्यम से संगीत का सहारा लेकर अपने पद जनमानस में लोकप्रिय किये।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

"हम घनि कूटनी परिनत नारी

बेसहु बास न कहाँ विचारी

काहू के फन काहुदिऊ सान

कत न हकारि कएल अपमान"[9]

ते हम गेलिहूं अवारे

चंदन भरम सिमर आलिंगन

समालि रहल हिय कोटि"[10]

विद्यापति पदावली गीत काव्य के विभिन्न लक्षणों से परिपुष्ट है। पदावली में प्रत्येक पद छंद संगीतमय हैं। गीत के विविध प्रकारों के अंतर्गत भजन, कीर्तन, गेय छंद, श्रृंगार प्रधान गीत, वर्णन प्रधान गीत, अनुनय-विनय, मान-मनुहार, प्रार्थना लोकगीत आदि हैं। विद्यापति पदावली के अंतर्गत उल्लिखित गीतों के सभी प्रकारों के उदाहरण प्राप्त होते हैं।

लय-मात्रा

लय दिखाने का कार्य मात्राएँ करती हैं। पदावली में इन्ही मात्राओं के योग से विभिन्न छंदों की सृष्टि हुई। मात्राओं का योग बदल देने से छंदों के विविध प्रकारों की सृष्टि होती है। विद्यापति पदावली में संगीत के मात्रिक छंदों को ग्रहण किया गया है। अतः लय मात्रा की दृष्टि से विद्यापति पदावली संगीतोपयोगी कृति सिद्ध हुई है।

ताल

विविध मात्राओं के विविध समूह को ताल कहते हैं। ताल के अनेक भेद हैं जैसे झपताल, एकताल, चारताल, तीनताल आदि। विभिन्न तालों में गाये जाने वाले छंद विद्यापति पदावली में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं जो ताल के शास्त्रानुकूल रचे गए।

सौंदर्य

ललित कलाओं का उद्देश्य सौंदर्य की सृष्टि करना है। काव्य में शब्द - योजना, भाषा, छंद, अलंकार आदि के माध्यम से सौंदर्य में वृद्धि होती है तथा संगीत में स्वर द्वारा रचित विभिन्न अलंकार, मीड, कण, मुर्की, खटका, गमक आदि के माध्यम से सौंदर्य की सृष्टि होती है। उल्लिखित समस्त विशेषताएँ विद्यापति पदावली में समाविष्ट हैं।

भाव और रस की कसौटी पर पदावली

काव्य और संगीत दोनों में ही भावों के माध्यम से रस की उत्पत्ति होती है। विद्यापति पदावली काव्य और संगीत दोनों का समन्वय रूप हैं जिसमें भावों का सघन कुंज है तथा रस की निरंतर सृष्टि हो रही हैं। इसी प्रकार पदावली भी एक संगीतोपयोगी रचना है जिसमें भाव और रस की अभिव्यक्ति के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो इसका प्रत्येक पद संगीत के लिए ही रचा गया है।

अलंकार

संगीत और काव्य दोनों में ही अलंकारों के प्रयोग से कलात्मक सौंदर्य का जन्म होता है। विद्यापति पदावली अलंकारों के अधिकांशतः सभी रूप उपलब्ध होते हैं। उनका प्रयोग विद्यापति द्वारा बलपूर्वक नहीं किया गया हैं। इसी विशेषता के कारण पदावली की रचना संगीत के अनुकूल हुई है।

संगीत शास्त्र के नियमों तथा मानदंडों के आधार पर पदावली का अध्ययन

पदावली के पदों को संगीत शास्त्रीय नियमों के अंतर्गत परख करने से ऐसा प्रतीत होता है। मानो इसकी रचना ही संगीत के लिए की गई है। विद्यापति ने अपने पदों में गीत गोविंद का अनुसरण किया है। उसी कारण उनसे संगीतात्मक गुण ध्वनित होता हैं क्योंकि गीत-गोविंद के गीत संगीत शास्त्र के लक्षणों से परिपूर्ण थे। पदावली के पदों में गेयत्व है तथा संगीत के अन्य गुण, रस, छंद, सौंदर्य लालित्य आदि भी पदावली के प्रत्येक पद में प्राप्त होते हैं। पदावली में भावनाओं की सघनता एवं संगीतात्मकता उनके ही द्वारा रचित लोकोक्तियों के प्रयोग से और बढ गई है। पदावली में लोकोक्तियों की प्रचुरता के संबंध में डा. पीयूष लिखते हैं:

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

"विद्यापति की कविताओं में भाव संबंधी जो विशिष्टताएँ है, उनका यथाकिचिंत निर्देशन किया गया है। परंतु उनमें भावों के अतिरिक्त एक और भी अंश है - उनकी लोकोक्तियाँ"[11]

इसके अतिरिक्त पदावली संगीत के स्वर और लय के अंतर्गत आने वाली सभी विशेषताओं को आत्मसात करने की क्षमता रखती है। उनके पद संगीत शास्त्रीय नियमों के अनुसार स्वरबद्ध वा तालबद्ध किए जा सकते हैं।

पदों मे प्रतिभा

विद्यापति में साहित्यिक आसाधारण प्रतिभा तो थी ही, साथ ही उनमें संगीत के प्रति संवेदनशीलता भी विद्यमान थी। वे ह्दय से रसिक तथा भावुक व्यक्ति थे। उन्होंने अपने पदों में जहाँ राधा और कृष्ण के मिलन संयोग श्रृंगार के मनोहारी चित्र खीचें है। वही अपने पदों में गेयत्व प्रदान कर संगीत रूपी प्राण भी फूंकें हैं। उनका प्रत्येक छंद गायन के योग्य है उसे स्वर ताल में निबद्ध किया जा सकता है। स्वर ताल बद्ध करके आपकी रचनाएं संगीत सम्मेलनों में गायकों का कण्ठहार बन गई हैं।

मैथिल प्रदेश में इनके पद ऐसे गाए जाते हैं जैसे उत्तर प्रदेश में सूर, मीरा, तुलसी दक्षिण भारत में त्यागराज पुरूंदरदास आदि के गाए जाते हैं। पदावली में अनुभूति की इतनी अधिक तीव्रता है कि उनके पद स्वयं में ही संगीतात्मक हो गए हैं। पदों में संगीत की झंकार और गीतों की लय वा गेयता पूर्णरूप से समाहित है:

"नंदक नंदन कदम्बक तरू - तट
घिरे घिरे मुरली बजाव
समय संकेत निकेतन बरसल
बेरि बेरि बोल-पठाव"[12]

इन पंक्तियों में स्वर संगीत तथा शब्द संगीत के साथ भावों की भी सशक्त अभिव्यंजना हुई हैं। विद्यापति के गीतों में संगीतात्मकता प्रचुर मात्रा में विद्यामान है:

"बाजत द्रिगि द्रिगि धाद्रिम द्रिमिया
नटति कलावति भानि स्याम संग
कर करताल प्रंबधक घनिया
डम डम डफ दिमिक द्रिम मादल
रूनु-झुन मंजीर बोल"[13]

इसी प्रकार विद्यापति के अनेक पद संगीत के लक्षणों से परिपुष्ट संगीत की विभिन्न लयों का सामंजस्य प्रस्तुत करते हैं। अतः विद्यापति के पदों में गेयता नामक लक्षण सहज ही प्राप्त हो जाता है।

पदों में गति प्रवाह

पदावली का कोई भी पद ऐसा नहीं है जिसमें गति-प्रवाह विद्यमान ना हो। विद्यापति पदावली के संबंध में प्रो. नलिन का यह कथन विशेष रूप से प्रकाश डालता है - "विद्यापति पदावली मूर्च्छना भरे संगीत की रणस्थली है और आत्म - विस्मृत कर देने वाली अनुभूतियों का साधना मंदिर"[14]

विभिन्न तालों में रचनाओं की अनुकूलता

पदावली में अधिकांशतः मात्रिक छंदों का संग्रह है। परिणामस्वरूप उन रचनाओं को विविध तालों में ताल बद्ध किया जा सकता है। क्योंकि संगीत में तालों की रचना मात्राओं के योग से ही होती है। मात्रिक छंदों के प्रयोग के कारण पदावली में समस्त भारतीय तालों के अनुकूल पद मिल जाते हैं।

पदानुकूल राग - रागनियों का प्रयोग

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

संगीत गीत का शरीर हैं और भाव गीत की आत्मा। भावों की संख्या अपरिमित है। राग-रागनियाँ भी अनेक हैं। अतः प्रत्येक भाव तथा प्रत्येक राग-रागनियों के अनुसार गीत के सेंकडो वर्ग बनेगें। इसलिए गीत में आए हुए भावों के अनुसार ही राग-रागनियों का चलन अवश्य हो गया। वैराग्य के भाव की सृष्टि में शांत रस, कारूणिक, भाव प्रसंगों में करूण रस, उत्साह के भावों में वीर रस तथा प्रेम प्रसंगों में श्रृंगार रस प्रधान राग-रागनियाँ का चयन उत्तम सिद्ध हुआ है। पदावली में विद्यापति ने राग-रागनियों के चुनाव में पदों की अनुकूलता का समस्त दृष्टियों से पूर्ण रूपेण निर्वाह किया है। विद्यापति पदावली में समकालीन राग रागिनी पद्धति का मुख्य रूप से पदों के साथ प्रयोग दृष्टिगत होता है। विद्यापति ने अपने पूर्ववर्ती तथा परवर्ती आचार्यों के द्वारा प्रतिपादित राग रागिनियों का प्रयोग पदावली में किया है। आज भी बिहार के आधुनिक शास्त्रीय संगीतज्ञों द्वारा आकाशवाणी से विभिन्न राग रागिनियों में विद्यापति के पद गाए जाते हैं। विभिन्न शास्त्रीय संगीत के सम्मेलनों में भी आधुनिक रागों में इनका गायन किया जाता है। विद्यापति के पद आधुनिक रागों की कसौटी पर भी खरे उतरते हैं। विद्यापति द्वारा गृहीत राग रागिनियाँ कुछ जयदेव कृत गीत गोविंद से, कुछ नाथों और सिद्धों के साहित्य से तथा समकालीन प्रचलित राग रागिनी पद्धति से ली गई है। विद्यापति के अनुयायियों में कृष्ण भक्ति संप्रदाय तथा अष्टछाप के भक्त कवियों में उनकी अनुकृति पूर्ण रूपेण प्रतिबिंबित हुई है। तुलसीदास के ग्रंथों में भी इनका अनुकरण उपलब्ध होता है।

विद्यापति की सुर साधना

कोई ऐसा ठोस प्रमाण तो उपलब्ध नहीं होता जिससे यह प्रमाणिक रूप से सिद्ध किया जा सके कि विद्यापति स्वयं गायक थे। उनकी पदावली को देखकर ऐसे प्रतीत होता है कि वह संगीत शास्त्र के सैद्धांतिक एवं एवं शास्त्रीय पक्ष के कुशल शास्त्रकार मर्मज्ञ एवं सहृदय कई अवश्य थे। दरबारी कवि होने के कारण उन्हें विभिन्न कलाकारों के समागम का भी अवसर प्राप्त होता था। पदावली द्वारा उनके संगीत शास्त्रीय ज्ञान का परिचय प्राप्त होता है। आगे चलकर इनके समस्त अनुयायी गायक कलाकार के रूप में विख्यात हुए। विद्यापति के पदों में गेयता है, प्रवाह है, गति है। इसलिए इन्हें स्वर ताल बद्ध करके गाए जाने की योग्यता भी है। इसलिए पदावली गीति काव्य की श्रेणी में लिखी जाने वाली एक उच्च श्रेणी की काव्यात्मक कृति कहलाई। इन्होंने अपनी रचना को किसी नियम या परिभाषा में बांधकर नहीं लिखा बल्कि मुक्त भाव से पदों की रचना की। उस समय गीति काव्य का जन्म तो हो गया था परंतु उसकी कोई परिभाषा नहीं हुई थी। विद्यापति के हृदय की सघन और निर्बाध अनुभूति शब्दों के घुंघरू बांधकर उद्गम वेग से स्वर ताल की चपलता में लिपटकर नाच उठी तब वह गीत बनकर पदावली में सुशोभित हुई।

हिंदी में गेय मुक्तक रचनाओं को विशेष पहचान देने के लिए 'भजन' या पद नाम दिया गया था। 'पद' या भजन के नाम से जिस विद्या विशेष का बोध होता है आजकल उसका बोध गीति काव्य या प्रगति से होता है। विद्यापति पदावली गेय पदों से परिपूर्ण है। उनके प्रत्येक पदों में संगीत झंकृत होता है। उन्होंने भावों को संगीतमय बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। विद्यापति की पदावली संगीत की कसौटी पर पूर्ण रूपेण खरी उतरती है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि संगीत जगत में विद्यापति पदावली व्यापक रूप से ग्राहय है। लोकगीतों के विकास के पीछे भी विद्यापति का बहुत बड़ा हाथ है। उनकी पदावली मैथिल लोक शैलियों में लिखी हुई है जो आने वाले युग को नवीन प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

निष्कर्ष

विद्यापति पदावली श्रृंगार रस की दृष्टि से अनुपम है। उनके पदों को जीवंत बनाने का श्रेय श्रृंगार को ही है। नायक एवं नायिका का पारस्परिक आकर्षण, प्रेम का अनुकरण, युग्म मिलन गमन, अभिसार और पूर्नमिलन आदि नाना रूपों में संयोग श्रृंगार में जितना एकांतिकता एवं माँसलता का निर्वाह किया है। उतनी ही वियोग के वर्णन में व्यापकता एवं भावात्मकता के दर्शन होते हैं। श्रृंगार वर्णन के अतिरिक्त कहीं-कहीं हास्य, वीर, शक्ति, करुणा आदि रसों के भी छींटें पड़ने की अनुभूति होती है। भक्ति के पदों में शांत रस तथा दुर्गा स्तुतियों में वीर,रोद्र और अद्भुत आदि रसों का सुंदर समन्वय हुआ है।

शास्त्रीय संगीत के दृष्टि से पदावली के गीत संगीत साहित्य के मूलभूत सिद्धांतों नाद, श्रुति, स्वर, सप्तक, थाठ, राग, गायन, गायन की विविध शैलियाँ गीत, लय, मात्रा, ताल आदि की कसौटी पर खरे उतरते हैं। पदावली के प्रत्येक पद का गायन संगीत के सभी स्वरों पर किया जा सकता है। इसमें ध्वनि के उतार चढ़ाव की क्षमता विद्यमान है जो की स्वर का प्रमुख लक्षण है।

पदावली में मधुर शब्द ध्वनियों का प्रयोग प्रत्येक छंद में हुआ है। साथ ही संगीत के अन्य गुण, रस, छंद, अलंकार, सौंदर्य, नायक नायिका भेद, काकू आदि का प्रयोग भी पदावली के पदों में व्याप्त है। इसी माधुर्य गुण के कारण पदावली संगीतमय सिद्ध हुई। पदावली में विभिन्न मात्राओं में छंदों के परिणामस्वरुप पदों को विविध भारतीय तालों में तालबद्ध किया जा सकता है। छंदों पर विद्यापति का पूरा अधिकार लक्षित होता है। उन्होंने

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

भावों के अनुकूल छंद योजना द्वारा अपने पदों में नाद- सौंदर्य की अवतारणा की है। मात्रिक छंदों का प्रयोग संगीतात्मकता की और संकेत करता है। इसलिए पदावली में समस्त भारतीय तालों के अनुकूल पद प्राप्त हो जाते हैं।

पदावली में गीतों के लिए राग रागनियां का वर्णन पदों के संदर्भ में किया गया है। राग के भाव के अनुकूल पदों पर राग के नाम दिए हैं जो उनके शास्त्रीय रागों के ज्ञान के सूचक है। इसी प्रकार बीन, रबाब, मुरज, करताल, डफ, मंजीरा आदि वाद्यों के नाम भी मिलते हैं। जो गायन की विभिन्न विभिन्न गायन शैलियों के लिए अलग-अलग वाद्य प्रयोग होने का पता चलता है।पदावली में पदों के साथ जो राग नाम दिए गए हैं उनकी प्रेरणा विद्यापति को सिद्धों नाथों तथा जयदेव से मिली। जयदेव विद्यापति के प्रेरणा स्रोत हैं। पदावली के पद लोकगीत और भजन शैली में लिखे गए हैं। परंतु पदावली में कुछ पद ऐसे भी प्राप्त होते हैं जिन्हें ख्याल, ठुमरी, ध्रुवपद, घमार आदि गायन शैलियों के अंतर्गत रखा जा सकता है।

जिस काल में पदावली की रचना हुई वह ध्रुवपद कल था। अतः स्वाभाविक है कि उनकी रचनाओं में मात्राओं का मानदंड ध्रुवपद में प्रयोग होने वाली तालों के अनुकूल हो। उनकी भक्तिपरक रचनाएं वंदना, प्रार्थना, स्तुति आदि ध्रुवपद शैली के अंतर्गत स्वरलिपि बद्ध किए जा सकते हैं। इसी प्रकार ख्याल शैली, ठुमरी, लोकगीत भजन आदि के लिए उपयुक्त पदों को विभिन्न तालों में स्वरलिपिबद्ध करके आज के आधुनिक संगीतज्ञ गा रहे हैं। साहित्यिक दृष्टिकोण से पदावली में भाव पक्ष और कला पक्ष का उद्घाटन रसात्मक और कलात्मक दृष्टिकोण से किया गया है। भावात्मक पक्ष के अंतर्गत पदावली में श्रृंगार के साथ-साथ अन्य रसों का भी समावेश हुआ है।

स्पष्ट है कि विद्यापति को कविता और संगीत पर समान अधिकार था। उन्होंने पदावली की रचना लोक भाषा मिथिला में किसी नियम या परिभाषा में बंधकर नहीं की। उन्होंने मुक्त भाव से पदों की रचना की है। उन्होंने पदावली के माध्यम से जहां एक और लोकमंगल की कामना की वहीं दूसरी और कलात्मक सृष्टि करके साहित्य और कला को एक सूत्र में बांधने का सफल प्रयास किया।

संदर्भ

1. Dr. Nagender, Saundarya Shashtra, Pri-45, Hindi
2. Aggarwal Vasudev, Kala or Sanskriti, Pri-102, Hindi
3. Aggarwal Maya, Vidyapati Padavali, Pri-137, Hindi
4. Vidyaalankar Kumud, Vidyaoati Padavali, Pri-2, Hindi
5. Vidyaalankar Kumud, Vidyaoati Padavali, Pri-322, Hindi
6. Parsad Shiv, Vidyapati, Pri- 183, Hindi
7. Parsad Shiv, Vidyapati, Pri- 184, Hindi
8. Parsad Shiv, Vidyapati, Pri- 179, Hindi
9. Parsad Shiv, Vidyapati, Pri- 183, Hindi
10. Piyush Krishannandan, Kavivar Vidyapati Sthapna or Vivechna, Pri-101, Hindi
11. Vidyaalankar Kumud, Vidyapati Padavali Manglacharan, Pri-3, Hindi
12. Geet, Vidyapati, Pri-609, Hindi
13. Nalinjainath, Vidyapati Ek Tulnatmak Samiksha, Pri-32, Hindi
14. Singh, Shivprasad, Vidyapati Ke Geet, pri-166, Hindi